Name of the College - A.P.S.M College Barauni
Name -> Dr. Rajesh Kumar Suman Date -> 28.4.2021
Designation -> [GT] Unit -> 01
Class -> B.A Part - 2 [H]
Paper -> III
Name of the topic -> Say's Law of Markets
["से" का बाजार नियम]

⇒ "से" का बाजार नियम क्या है?

⇒ प्रसिद्ध फ्रेंच अर्थशास्त्री जे० बी० से [Jean Baptiste Say] ने अपनी पुस्तक 'ट्रेट डी एकनोमिक पोलिटिक [Traite D'Economique Politique) में बाजार सम्बन्धी एक संक्षिप्त नियम का प्रतिपादन किया था। इस नियम को 'से' का बाजार नियम [Say's Law of Market) कहा जाता है।

जे० बी० से ने यह धारणा व्यक्त की "पूर्ति स्वयं अपनी माँग पैदा करती है" [Supply Creates its own demand] जिसके कारण अर्थव्यवस्था में अत्यधिक उत्पादन और बेरोजगारी की समस्या पैदा नहीं होती। यदि किसी कारण अत्यधिक उत्पादन के कारण श्रमिकों को हटा दिया जाता है और अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति एक-दूसरे के समान हो जाते हैं।

'से' के शब्दों में, "उत्पादन ही वस्तुओं के लिए बाजार पैदा करता है। ज्योंही किसी वस्तु का उत्पादन होता है, त्योंही उसी क्षण से, वह अपने मूल्य की पूरी मात्रा में अन्य वस्तुओं के लिए बाजार पैदा कर करता है। दूसरी वस्तु की पूर्ति जितनी एक वस्तु की माँग के अनुकूल होती है। उतनी कुछ और नहीं"

⇒ 'से' का नियम सारांशतः निम्नलिखित रूप में है :-

(i) "पूर्ति सदैव अपनी माँग का स्वयं सृजन करती है"
[Supply always creates its own demand]

(ii) 'यह उत्पादन ही है जो वस्तुओं के बाजार का सृजन करता है"
[It is production which creates market for goods]

Scanned with CamScanner

⇒ नियम की व्याख्या :- उपर्युक्त कथनों का यह अर्थ है कि बाजार ही उत्पादन का सृजन करता है। इनके मतानुसार माँग का मुख्य स्रोत उत्पादन के विभिन्न साधनों से प्राप्त होने वाली आय होती है और यह आय उत्पादन प्रक्रिया से स्वतः ही उत्पन्न होती है। जब कभी उत्पादन की कोई नवीन प्रक्रिया शुरू की जाती है और इसके परिणामस्वरूप एक निश्चित उत्पादन उपलब्ध होता है तो उत्पादन के साथ ही साथ माँग इसलिए बढ़ती है कि फलतः जितना माल तैयार होता है, वह सारा स्वतः बिक जाता है। से। के अनुसार, "यह उत्पादन है जिसके द्वारा वस्तु की बाजार उत्पन्न की जाती है।"

से। के नियम की मौद्रिक अर्थ-प्रणाली में क्रियाशीलता की अग्रलिखित विधि द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। अग्रांकित उदाहरण से ज्ञात होता है कि प्रथम वर्ष अर्थव्यवस्था में 10 करोड़ रु. का उत्पादन (सम स्त पूर्ति) होता है। इसके फलस्वरूप उत्पादन के साधनों की आय में 10 करोड़ रुपये की वृद्धि होगी। वे 10 करोड़ रुपये का आय की कुल पूर्ति खरीदने में खर्च कर देंगे। इस प्रकार कुल माँग में 10 करोड़ रुपये की वृद्धि होगी। अतएव कुल पूर्ति अपनी माँग का स्वयं निर्माण कर लेगी। कुल माँग के कारण राष्ट्रीय आय फिर से उत्पादकों के पास पहुँच जायेगी। तथा वे दूसरे वर्ष 10 करोड़ रुपये का उत्पादन कर सकेंगे। यह चक्रीय प्रवाह चलता रहेगा और इस प्रकार की सामान्य बेरोजगारी या अति उत्पादन की संभावना नहीं रहेगी।